By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-12

Topic – Fascism

Class – B.A. Degree-III (Hons. P-VIII.D)

Subject – Political Science

Date – 14 August, 2020

By Rahulkumar Jha.

फासीवाद :-

फासीवाद एक ऐसा दर्शन है जो वास्तविता पर आधारित है। मुसोलिनी ने स्वयं कहा था कि हम समय, स्थान और वातावरण के अनुसार कुछ भी हो सकते हैं। प्रथम विश्व युद्ध के बाद इटली व जर्मनी के सामने प्रमुख समस्या आर्थिक विकास की थी। वर्ष पर राजनीतिक अस्थिरता का जो माहौल बना हुआ था, उसे दूर करने के लिए एक ऐसे ही कार्यक्रम की आवश्यकता थी, जो फासीवादियों द्वारा चलाया गया। यदि मुसोलिनी उग्र-राष्ट्रीयता को बढ़ावा न देता और इटली के गौरवमयी इतिहास की बात जनता के सामने न रखता तो

इटली के लोगों को संगठित करना व उनका विश्वास जीतना उसके लिए असम्भव था। इसलिए जिस प्रकार की निरंकुश शासन-व्यवस्था उसने कायम की, वह तत्कालीन परिस्थितियों की माँग थी।

मुसोलिनी तथा हिटलर द्वारा दिए गए सभी सुझाव व कार्यक्रम तत्कालीन परिस्थितियों में सही थे और समस्त फासीवादी कार्यक्रम भी औचित्यपूर्ण थे। लेकिन आगे चलकर कई देशों में फासीवाद का विकृत रूप भी उभरने लगा और इससे जनता को बहुत हानि हुई। जब फासीवादी आंदोलन एक आवश्यकता न रहकर संकीर्ण स्वार्थ सिद्धियों का साधन बन गया तो इसकी सर्वत्र निन्दा होने लगी और फासीवादी शासन के अंत के साथ ही फासीवादी विचारधारा भी अलोकप्रिय होती गई।

आज फासीवाद के कुछ न कुछ तत्व कई देशों की शासन व्यवस्थाओं में अवश्य विद्यमान है, लेकिन उनका अंतर्राष्ट्रीयता के युग में कोई विशेष महत्व नहीं है। इटली के फासीवादी शासन तथा तालिबान के अफगानिस्तान में शासन के तानाशाही तत्वों को अमेरिका ने जिस कदर मिटा किया है, उससे फासीवाद के अंत के लक्षण स्पष्ट तौर पर उभरे हैं। अतः फासीवाद एक घृणास्पद विचारधारा है। इसकी तत्कालीन समय में तो महत्व हो सकता है, परंतु आज नहीं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस विचारधारा को अपना आदर्श बनाकर मुसोलिनी और हिटलर इस कदर आक्रामक हो गया था कि इसकी परिणति विश्व युद्ध में हो गया। जो मानवता के इतिहास में एक काला धब्बा है। आज के लोकतांत्रिक युग में इसे समर्थन नहीं किया जा सकता है।

CHAPTER CONTINUES....